

اگست ۲۰۱۲ء

# ماہنامہ شمع

قَالَ اللَّهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى  
قَدْ جَاءَكُمْ مِنَ اللَّهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُبِينٌ  
يَهْدِي اللَّهُ لِنُورِهِ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ يَهْدِي مَن يَشَاءُ لِمَا يَشَاءُ اللَّهُ يُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِمَن يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ



مؤسسہ نور ہدایت حسینیہ غفران مآب لکھنؤ-۳

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526  
Postal Regd. No. SSP/LW/NP-75/2005-07

Monthly

## SHUA-E-AMAL

Lucknow

## शुआ-ए-अमल

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका  
लखनऊ

حسینیہ حضرت دلدار علی غفران مآب



**NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION**

Imambara Ghufuran Maab, Chowk

LUCKNOW-3 (U.P.) INDIA

Phone : 2252230

वर्ष—3

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526  
Postal Regd No-SSP/LW/NP-75/2005-07

अंक 2

माह अगस्त — 2006 लखनऊ

नूर—ए—हिदायत फाउण्डेशन की  
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

**शुआ-ए-अमल**

“लखनऊ”

संरक्षक

मौलाना सै. कल्बे जवाद नक्वी साहिब

सम्पादक

सै. मुस्तफा हुसैन नक्वी ‘असीफ’ जायसी

उप—सम्पादक

हैदर अली

कार्यकारिणी बोर्ड

प्रोफेसर सै. हुसैन कमालुद्दीन अकबर, मु0 र0 आबिद,  
सैय्यद समीउल हसन वसीम, शबीब अकबर नक्वी

वार्षिक — 200 रु

मिलने का पता

कीमत — 20 रु

**नूर—ए—हिदायत फाउण्डेशन**

इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड  
चौक लखनऊ — 3 (उ.प्र.) भारत फोन न0 0522—2252230

सै. कल्बे जवाद नक्वी प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपराइटर ने मासिक शुआ-ए-अमल (उर्दू, हिन्दी) निज़ामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस नूर-ए-हिदायत फाउण्डेशन इमामबाड़ा गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ-3 से प्रकाशित किया। सम्पादक : सै0 मुस्तफा हुसैन नक्वी ‘असीफ जायसी’।

## फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

न०	मज़मून	लेखक	पेज न०
1-	हज़रत अली अलैहिस्सलाम		
	आयतुल्लाहिल उज़मा सैय्यदुल उलमा सैय्यद अली नकी ताबा सराह		3
2-	इमाम मुहम्मद बाकिर अलैहिस्सलाम का मक़ाम		
	मौलाना इम्तियाज़ हैदर साहब		8
3-	हज़रत इमाम अली नकी अलैहिस्सलाम		
	आयतुल्लाह सैय्यद मुहम्मद हुसैन तबातबाई		11
4-	हज़रत अबुतालिब (अ०) की वफ़ात		
	मौलाना सै० असद अली साहब फ़िब्ला		12
5-	इस्लाम में शादी के ऊँचे मक़सद		
	हुज्जतुल इस्लाम हुसैन अन्सारियान		13
6-	मुख्य समाचार		
	इदारा		15

## अक़्वाले मौलाए काएनात (अ०)

- ☐ तुम्हारा बेहतरीन दोस्त वह है जो तुमको इताअते इलाही पर मजबूर करे।
- ☐ बला के तूफ़ान को इबादत व दुआ के ज़रिए दूर करो।
- ☐ जानने के लिए सवाल करो फितना फैलाने के लिए नहीं।
- ☐ किसी के मुसीबत में गिरफ़्तार हो जाने से खुश न हो।
- ☐ अपनी बीमारी का इलाज बेकसों की दस्तगीरी और मदद से करो।

# हज़रत अली अलैहिस्सलाम

आयतुल्लाहिल उज़मा सैय्यदुल उलमा सैय्यद अली नकी ताबा सराह

**विलादत:- 13 रजब 30 आमूलफील**

**शहादत:- 21 रमज़ान 40 हिजरी**

रसूल (स0) के बाद दूसरी मेयारी शख़्सियत जो हमारे सामने है वह हज़रत अली इब्ने अबी तालिब (अ0) की है।

आप की दस साल की उम्र है जब पैग़म्बर को पैग़म्बरी मिली और अली इब्ने अबी तालिब (अ0) उनकी रिसालत के गवाह होते हैं यह पहले ही से रसूल (स0) की आगोश में तरबियत पा रहे थे अब उसी आगोश में दावते इस्लाम की परवरिश शुरू हुई। यूँ कहना चाहिए कि इस्लाम ने आँख खोल कर उन्हें देखा और उनकी निगाह वह थी कि एलाने रिसालत के पहले रसूल (स0) की रिसालत को देख रहे थे। खुद अपने बचपन की कैफियत नहजुलबलाग़: के एक खुतबे में बतायी है कि:

“मैं रसूल के पीछे-पीछे यूँ रहता था जैसे ऊँटनी का बच्चा ऊँटनी के पीछे रहता है। मैं नुबुव्वत की खुशबू सूँघता था और रिसालत की रौशनी देखता था।

अब ज़ाहिर है कि उनको रसूल (स0) से कितना उन्स होना चाहिए। फिर वह रिश्तेदारी की मुहब्बत अलग जो भाई होने के एतेबार से होनी चाहिए और वह अलग जो बहैसियत एक घर में रहने के होना चाहिए और वह इसके अलावा जो अपने मुरब्बी से होना चाहिए और वह इसके अलावा जो उनसे बहैसियते रसूल (स0) और उनके पैग़ाम

से बहैसियते हक्कानियत होना चाहिए।

अभी अगरचे दस साल की उम्र है मगर अरब और बनी हाशिम के और वह भी उस वक़्त के दस साल के बच्चे को अपने हिन्दुस्तान का इस ज़माने का दस साल का बच्चा न समझना चाहिए और फिर वह भी अली (अ0) जैसा बच्चा। फिर उस वक़्त तो दस ही साल की उम्र है मगर उसके बाद 13 साल रसूल (स0) के मक्का में गुजरने हैं और यही इन्तिहाई परेशानी और तकलीफ़ों व सख़्त्रियों से भरा हुआ दौर है। हिज्रत के वक़्त अली इब्ने अबी तालिब (अ0) की उम्र 23 साल हुई, दस साल से 23 साल के बीच का दौर वह है जब बचपना क़दम बढ़ाता हुआ मुकम्मल जवानी की मन्ज़िल तक पहुँचता है। यह ज़माना जोशो ख़रोश का होता है यह ज़माना वलवले व उमंग का होता है बढ़ती हुई हरारत, जवानी की मन्ज़िलें इस दौर में गुज़र रही हैं। आम इन्सानों के लिए यह दौर वह होता है जिसमें नतीजों और अन्जामों पर नज़र कम पड़ती है इन्सान हर दुश्वार मन्ज़िल को आसान और हर नामुमकिन को मुमकिन ख़याल करता है और नुक़सानात का अन्देशा दिमाग़ में कम लाता है। यहाँ यह दौर इस हाल में गुज़र रहा है कि अपने मुरब्बी के जिस्म पर पत्थर मारे जा रहे हैं। सर पर कूड़ा-करकट फेंका जाता है। तानों और बुराई का कोई दक्कीका उठा नहीं रखा जाता फिर फितरी तौर पर यही लान-तान और बुराईयाँ हर उस शख़्स को जो



रसूल से जुड़ा है अपनी ज़ात के लिए भी सुनना पड़ती हैं खास तौर से इस लिहाज़ से कि रसूल (स0) के हम उम्र या मुक़ाबिल फिर भी बड़ी उम्र के हो सकते हैं लेकिन अली इब्ने अबी तालिब (अ0) के हम उम्र जो मुख़ालिफ़ जमात में ख़याल किये जा सकते हैं वह बदतमीज़ और जाहिल होने के साथ अपनी उम्र के लिहाज़ से भी छोटी-छोटी हरकतों पर हर वक़्त आम़ादा समझे जा सकते हैं। कौन समझ सकता है कि वह अली इब्ने अबी तालिब (अ0) की जो रसूल (स0) से इतनी शदीद मुहब्बत रखते थे कैसे-कैसे दिल आज़ारी करते थे, क्या-क्या ताने और क्या-क्या ज़ख़्म जबान से पहुँचाते थे। उसे कोई रावी न भी बयान करे तो भी हर अक़ल वाला कुछ न कुछ समझ सकता है।

अब मुमकिन है कि उस वक़्त अभी दुनिया अली इब्ने अबी तालिब (अ0) को बिलकुल न समझती हो कि वह क्या हैं? मगर अब इस वक़्त तो तारीख़ के ख़ज़ाने में अली इब्ने अबी तालिब (अ0) की वह तसवीर भी मौजूद है जो हिजरत के एक साल बाद बद्र में और फिर दो साल बाद ओहद में और फिर ख़ैबर और ख़न्दक़ और हर जंग में नज़र आती है।

जज़्बात के लेहाज़ से, दिल की कुव्वत के एतेबार से, ज़ुराअत व हिम्मत की हैसियत से 22 साल और 23 साल और फिर 24-25 साल में कोई खास फ़र्क़ नहीं होता। यकीनन अली (अ0), जैसे हिजरत के एक दो और तीन साल बाद बद्र व ओहद और ख़न्दक़ व ख़ैबर में थे ऐसे ही हिजरत के वक़्त और हिजरत के दो चार साल पहले भी थे। यही बाजू, यही बाजूओं की ताक़त, यही दिल और

यही दिल की हिम्मत, यही जोश, यही इरादा, ग़र्ज़ कि सब कुछ अब बाद में नज़र आ रहा है। अब इसके बाद क़द्र करना पड़ेगी कि इस हस्ती ने वह 13 साल इस हाल में कैसे गुज़ारे।

और कोई ग़लत रिवायत भी यह नहीं बताती कि किसी वक़्त अली (अ0) ने जोश में आकर कोई ऐसा क़दम उठाया हो जिस पर रसूल (स0) को कहना पड़ा हो कि तुमने ऐसा क्यों किया? या किसी वक़्त पैग़म्बर (स0) को यह अन्दाज़ा हुआ हो कि यह ऐसा करने वाले हैं तो बुलाकर रोका हो कि ऐसा न करना। मुझे इससे नुक़सान पहुँच जायेगा।

किसी तारीख़ और किसी हदीस में ग़लत से ग़लत रिवायत ऐसी नहीं हालाँकि हालात ऐसे नागवार थे कि कभी-कभी बूढ़े लोगों को भी जोश आ गया और उन्होंने रसूल (स0) के मसलक के ख़िलाफ़ कोई इक़दाम कर दिया और उसकी वजह से उन्हें जिस्मानी तकलीफ़ से दोचार होना पड़ा। मगर हज़रत अली इब्ने अबी तालिब (अ0) से किसी से झगड़ा हो गया हो इसके मुताल्लिक़ कमज़ोर से कमज़ोर रिवायत पेशी नहीं की जा सकती।

यह वह ग़ैर मामूली किरदार है जो आम लोगों के लेहाज़ से यकीनन आदत के ख़िलाफ़ यह किसी जज़्बाती इन्सान का किरदार नहीं हो सकता। यह 13 साल की लम्बी मुद्दत इस उम्र में जो जोश की उम्र है हौसलों की उम्र है। भला मुमकिन है इस सुकून के साथ गुज़ारी जा सके।

उसके बाद हिजरत होती है। हिजरत के वक़्त वह फ़िदाकारी, पैग़म्बर (स0) का फरमाना कि आज रात को मेरे बिस्तर पर लेटो। मैं मक्के

से चला जाऊँगा। पूछा हुजूर की ज़िन्दगी तो इस सूरत में बच जाएगी? फरमाया हाँ मुझ से वादा हुआ है मेरी हिफाज़त होगी यह सुनकर हज़रत अली इब्ने अबी तालिब (अ0) ने सर सिजदे में रख दिया कहा शुक्र है कि उसने मुझे अपने रसूल (स0) का फिदया करार दिया।

चुनानचे रसूल (स0) तशरीफ ले गए और आप पैग़म्बर (स0) के बिस्तर पर आराम करते रहे इसके बाद कुछ दिन मक्का मुअज़्ज़मा में मुक़ीम रहे मक्का में मुशिरकीन की अमानतें उनके मालिकों को वापस की और पैग़म्बर की अमानतें साथ लीं यानि हुजूर के घर की ख़वातीन जिनमें फ़वातिम यानि फातिमा बिनते मुहम्मद (स0), फातिमा बिनते असद और फातिमा बिनते जुबैर बिन अब्दुलमुत्तलिब थीं उनको लेकर रवाना हुए। खुद ऊँट की लगाम अपने हाथ में ली और हिफाज़त करते हुए पैदल मदीना पहुँचे यहाँ आने के एक साल बाद अब जिहाद की मन्ज़िल आई और पहली ही जंग यानि बद्र में अली (अ0) ऐसे नज़र आए जैसे बरसों के बहादुर, जंगें लड़े हुए और कड़ियाँ मैदान की झोले हुए।

उधर के तीन बड़े सूरमा उत्तबा, शैबा और वलीद। उनमें से शैबा को जनाबे हमज़ा ने क़त्ल किया, उत्तबा और वलीद दोनों का हज़रत अली इब्ने अबी तालिब (अ0) की तलवार से ख़ात्मा हुआ। यह कारनामा खुद जंग की फतह का ज़ामिन था। वह तो सिर्फ़ इन्सान की तौर पर आम मुसलमानों में दिल को मज़बूत करने के लिए इस जेहाद में फरिश्तों की फौज भी आ गई यह साबित करने के लिए कि घबराना नहीं वक़्त पड़ेगा तो फरिश्तें आ जाएँगे। हालाँकि इसके बाद

फिर किसी जंग में उनका आना साबित नहीं। इसके बावजूद ओहद में अली इब्ने अबी तालिब (अ0) ने अकेले बिगड़ी हुई लड़ाई को बनाकर और जीत हासिल करके दिखला दिया कि बद्र में भी अगर फरिश्तों की फौज न आती तो यह दस्त व बाजू उस जंग को भी जीत ही लेते। इसके बाद ख़न्दक़ है ख़ैबर है। हुनैन है यहाँ तक कि उन तमाम कारनामों से अली (अ0) का नाम ही दुश्मनों के लिए मौत के बराबर हो गया। ख़ैबर व ख़न्दक़, जुलफ़िकार और अली (अ0) में दलालते इल्तेज़ामी का रिश्ता कायम हो गया कि एक के ख़याल से मुमकिन ही नहीं कि दूसरे का ख़याल न हो। यह वही 13 साल तक ख़ामोश रहने वाले अली (अ0) हैं। इन दस साल के अन्दर जिनका हाल यह है मगर उसी दौरान हुदैबिया की मन्ज़िल आती है और वही हाथ जिसमें जंग का अलम होता था यहाँ उसी में सुलह का क़लम है जो तलवार वाला था वही क़लम वाला नज़र आता है और उन सुलह की उन शर्तों को जिन पर इस्लामी फौज के बहुत से लोगों में बेचैनी फैली हुई है और उसे कमज़ोरी समझा जा रहा है बिना किसी बेचैनी और बग़ैर किसी शक व शुब्ह के हज़रत अली इब्ने अबी तालिब (अ0) लिख रहे हैं जिस तरह मैदाने जंग में क़दम में घबराहट और हाथों में कपकपी नहीं आयी उसी तरह आज सुलह के अहदनामा के लिखने में उनके क़लम में कोई घबराहट और हाथों में कपकपाहट नहीं है। उनका जेहाद तो वही है जिसमें खुदा की मर्ज़ी हो। जिसके रास्ते में तलवार चलती थी उसी के रास्ते में आज क़लम चल रहा है और सुलह नामा लिखा जा रहा है।

इसी ज़माने में एक मुल्क भी फ़तह करने भेजे गए थे और वह यमन है मगर वह तलवार वाले और साहेबे जुलफिकार होते हुए भी यहाँ तलवार से काम नहीं लेते। उन्होंने इस्लामी जीत की मिसाल पेश कर दी। पूरे यमन को सिर्फ़ ज़बानी तबलीग़ से एक दिन में मुसलमान बना लिया। खून का एक क़तरा नहीं बहा। दिखा दिया कि मुल्क इस तरह फतह करो। मुल्क पर कब्ज़े के मानी यह हैं कि मुल्क वालों को अपना बना लो, बस मुल्क तुम्हारा हो गया।

बहरहाल इन दो मिसालों को छोड़कर हज़रत अली इब्ने अबी तालिब (अ0) की ज़िन्दगी के इस दौर में बहुत से मौकों पर तलवार नुमाय़ों नज़र आएगी और “ला फता इल्ला अली ला सैफा इल्ला जुलफिकार” में आपकी शान छुपी हुई मालूम होगी मगर अब पैगम्बरे खुदा (स0) की वफात हो जाती है उस वक़्त हज़रत अली इब्ने अबी तालिब (अ0) की उम्र 33 साल की है इसे भरपूर जवानी का ज़माना समझना चाहिए मगर इसके बाद पच्चीस साल की लम्बी मुद्दत हज़रत अली इब्ने अबी तालिब (अ0) यूँ गुज़ारते हैं कि तलवार नियाम में है और आपका काम इबादते इलाही और ज़िन्दा रहने भर की रोज़ी के लिए मेहनत व मज़दूरी के सिवा बज़ाहिर और कुछ नहीं।

यह ऐसी काँटों भरी वादी है जिसमें ज़रा भी खुलकर कुछ कहना तहरीर को मुनाज़रों से भरने वाला बना देना है। फिर भी यह सोचने और समझने की बात लाज़मी है कि बावजूद यह कि मुसलमानों की जंग आजमाइयों का ज़माना और बड़ी जीतों का दौर है जिसमें इस्लाम कुबूल करने के बाद गुमनाम हो जाने वाले लोग सैफुल्लाह और फातेहे मुमालिक और गाज़ी बन रहे हैं फिर

जो भी तलवार हर जगह पर रसूल (स0) के अहद में नुमाय़ों काम करती नज़र आती थी वह इस दौर में पूरी तरह नियाम के अन्दर है? आख़िर क्या बात है कि वह जो हर मैदान का मर्द था अब तनहाई के गोशे में घर के अन्दर है। अगर उसको बुलाया नहीं जाता तो क्यों? और अगर बुलाया जाता है और वह नहीं आता तो क्यों? दोनों बातें तारीख़ के एक तालिबे इल्म के लिए अजीब ही हैं ऐसा भी नहीं है कि वह बिलकुल ग़ैर मुताल्लिक है नहीं अगर कभी कोई मशवरा लिया जाता है तो वह मशवरा दे देता है कोई इल्मी मसला सामने आता है और उसके हल करने की ख़ाहिश की जाती है तो वह हल कर देता है मगर उन लड़ाइयों में जो जेहाद के नाम से हो रही हैं उसे शरीक नहीं किया जाता। न वह शरीक होता है। 25 साल की लम्बी मुद्दत गुज़री और अब हज़रत अली इब्ने अबी तालिब (अ0) की उम्र 58 साल की हो गई यह बुढ़ापे की उम्र है जिस तरह मक्का की 13 साल की ख़ामोशी के दरमियान बचपना गया था और जवानी आई थी उसी तरह इस 25 साल की ख़ामोशी के दौरान में जवानी गई और बुढ़ापा आया। गोया उनकी उम्र का हर दौराहा सब्र बर्दाश्त और ज़ब्त व सुकून के आलम में आता रहा। भला अब कैसे ख़याल हो सकता है कि जिसको जवानी गुज़र कर बुढ़ापा आ गया और उसने तलवार नियाम से न निकाली वह अब कभी तलवार खींचेगा और मैदाने जंग में मार-काट करता नज़र आयेगा। आलमे अस्बाब कें आम तकाज़ों के लेहाज़ से तो उस 25 साल की मुद्दत में जोश व उमंग की चिंगारियाँ तक सीने में बाकी नहीं रहीं। हिम्मत के सोते सूख गए और अब दिल में उनकी नमी तक नहीं रह गई। अब न

दिल में वह जोश हो सकता है न बाजुओं में वह ताक़त। न हाथों में वह सफाई और न तलवार में वह काट मगर 58 साल की उम्र में वह वक़्त आ गया कि मुसलमानों ने ज़िद करके ख़िलाफ़त की बागडोर आपके हाथ में दे दी। आपने बहुत इन्कार किया मगर मुसलमानों ने खुशामद व गिड़गिड़ाहट की हद कर दी और हुज्जत हर तरह तमाम हो गई। लेकिन जब आप (अ0) तख़्ते ख़िलाफ़ पर बैठे और इस ज़िम्मेदारी को कुबूल कर चुके तो कई जमाअतों ने बगावत कर दी। आपने हर एक को पहले तो समझाने की कोशिश की और जब हुज्जत हर तरह तमाम हो गई तो दुनिया ने देखा कि वही तलवार जो बद्र व ओहद और ख़न्दक़ व ख़ैबर में चमक चुकी थी अब जमल, सिफ़्फ़ीन और नहरवान में चमक रही है। और फिर यह नहीं कि फौजें भेज रहे हों और खुद घर में बैठे बल्कि खुद मैदाने जंग में मौजूद और खुद जेहाद में लगे हुए हैं अब ऐसा महसूस हो रहा है जैसे कोई नौजवान तबीअत जो सामने वाले से दो-दो हाथ करने के लिए बेचैन हो। चूँकि हज़रत की हैबत दुश्मन की फौज के हर सिपाही के दिल पर थी इसलिए सिफ़्फ़ीन में जब आप मैदान में निकल आते थे तो फिर मुकाबला करने वाली जमात का दरवाज़ा बन्द हो जाता था और कोई मुकाबले को बाहर न आता था। उसे देख कर आपने यह सूरत इख़्तियार फरमाई कि दूसरे अपने साथियों का लिबास पहन कर तशरीफ़ ले जाते थे। चूँकि जंग का लिबास बदलने से पता न चलता था कि यह कौन है और आप कभी अब्बास बिन रबीआ और कभी फज़ल बिन अब्बास और कभी किसी और का लिबास पहन कर तशरीफ़ ले जाते थे और इस तरह बहुत से मौत की नज़र हो जाते थे।

लैलतुलहरीर में तैय कर लिया कि जीत के बिना जंग न रुकेगी। पूरे दन लड़ाई हो चुकी थी सूरज डूब गया तब भी लड़ाई न रुकी। पूरी रात जंग होती रही यहाँ तक कि जंग का नक़्शा बदल गया और सुबह होते होते शाम की फौज ने कुर्आन नेज़ों पर उठा लिये जिनसे जंग टालने की दरखास्त मतलूब थी और यह जंग की हार का खुला हुआ एलान था।

यह 60 साल की उम्र में जिहाद है और यही वह हैं जो तैंतीस साल की उम्र से 57 साल तक की मुद्दत यूँ गुज़ार चुके हैं जैसे कि सीने में दिल ही नहीं और दिल में जोश और जंग का हौसला ही नहीं।

अब ऐसे इन्सान को क्या कहा जाए? जंग पसन्द या आफियत पसन्द? मानना पड़ेगा कि यह कुछ भी नहीं हैं यह तो फराएज़ के पाबन्द हैं जब फर्ज़ होगा ख़ामोशी का तो ख़ामोश रहेंगे। चाहे जवानी की हरारत और उसका जोश और जज़्बा कुछ भी तकाज़ा रखता हो। उस वक़्त कितनी ही सब्र का इम्तिहाने लेने वाली मुश्किलें सामने आती रहें वह सब्र करेंगे और घबराएँगे नहीं।

और जब फर्ज़ महसूस होगा कि तलवार उठाएँ तो तलवार उठाएँगे, चाहे बुढ़ापे का ढलना हो जो आम लोगों में इस उम्र में हुआ करता है कुछ भी तकाज़ा रखता हो। अब जंग व ज़र्ब में वह सख़्तियों का मुकाबला करने में वह जवानों से आगे नज़र आएँगे। यही वह “मेराजे इन्सानियत” है, जहाँ तक तबीयत, आदत और जज़्बात के तकाज़ों में गिरफ़्तार इन्सान पहुँचा नहीं करते।





## इमाम मुहम्मद बाकिर अ० का मक़ाम

**मौलाना इम्तियाज़ हैदर साहब**

**विलादत:- 1 रजब 57 हि०**

**शहादत:- 7 ज़िलहिज्जा 114 हि०**

फिक्री व अमली और दूसरी सलाहियों के लेहाज़ से समाज की रहबरी का ऊँचा मक़ाम जो आप (अ०) को आपके बुजुर्ग बाप जनाबे सैय्यदे सज्जाद (अ०) की परवरिश के नतीजे में हासिल हुआ था, वही सबब बना कि आपके ज़माने के सभी साथी चाहे दोस्त हों या दुश्मन, आप (अ०) की क़द्र व मन्ज़िलत का एतेराफ करें।

इस जगह मुनासबत के लेहाज़ से इमाम बाकिर (अ०) की शख़सियत के मुताल्लिक इस्लामी समाज के बुजुर्गों के कुछ अक़वाल मुलाहेज़ा फरमाएँ:

1— अब्दुल्लाह बिन अज़ता मक्की कहते हैं: हमने अपने ज़माने के दानिश्वरों में किसी को नहीं देखा जो मुहम्मद बिन अली बाकिर (अ०) के इल्म व समझ को सतही समझे।

2— मुहियुद्दीन बिन शरका नूवी कहते हैं: आप (अ०) जलीलुलक़द्र ताबईन में से एक हैं। आप (अ०) अज़ीमुश्शान इमाम हैं जिनकी बुजुर्गी पर सभी मुत्तफ़िक़ हैं। आप (अ०) मदीने के ऊँचे फ़ुक्हा में शुमार होते हैं। आप (अ०) ने जाबिर और अनस से बिना किसी वास्ते के रिवायत सुनी है। और अबुइस्हाक़, अता बिन अबु रबाह, अम्र बिन दीनार अअरजी अगरचे यह हज़रात आपसे कमसिन थे, ज़ोहरी, रबीआ और दूसरे ताबईन व दीनी बुजुर्गों के एक गिरोह ने आपसे रिवायत नक़ल की है। बुख़ारी व मुस्लिम और दूसरे लोगों

ने भी आपके मुताल्लिक़ रिवायात बयान की हैं।

3— इब्ने इबाद हम्बली कहते हैं: अबुजाफ़र बिन मुहम्मद (अ०) मदीने के फ़ुक्हा में से हैं। आपको बाकिर कहा जाता है इसलिए कि आप (अ०) ने इल्म को शिगाफ़ता किया है और उसकी हकीक़त व जौहर को पहचाना है।

4— मुहम्मद बिन तलहा शाफ़ी कहते हैं: मुहम्मद बिन अली (अ०) दानिश को शिगाफ़ता करने वाले और तमाम उलूम के जामे हैं आपकी हिकमत आशकार और इल्म आपके ज़रिए सरबुलन्द है। आप (अ०) के सरचश्म-ए-वुजूद से समझ अता करने वाला दरया भरा है। आप (अ०) की हिकमत के लाल व गुहर ज़ेबा व दिलपज़ीर हैं। आप (अ०) का दिल साफ़ और अमल पाकीज़ा है। आप मुतमइन रुह और नेक अख़लाक़ के मालिक हैं। अपने वक्तों को इबादते ख़ुदावन्दी में बसर करते हैं। परहेज़गारी में साबित क़दम है। बारगाहे परवरदिगार में मुक़र्रब और बुजुर्ग होने की अलामत आपकी पेशानी से झलक रही है। आप (अ०) के हुज़ूर में मनाकिब व फ़ज़ाएल एक दूसरे पर सबक़त हासिल करना चाहते हैं। नेक ख़सलतों और शराफ़त ने आप से इज़्ज़त पाई है।

5— इमादुद्दीन अबुल फिदा इस्माईल बिन अम्र बिन कसीर कहते हैं: अबुजाफ़र (बाकिर अ०) बुजुर्ग व जलीलुलक़द्र ताबईन में से हैं। आप (अ०) इल्म व अमल और सरदारी व इज़्ज़त में इस उम्मत के मारुफ़ फ़र्द शुमार होते हैं। चूँकि आपने उलूम को शिगाफ़ता करके उससे अहक़ाम

हासिल किये। इसलिए आपको बाकिर कहा जाता है। आप (अ0) खुदा का जिक्र करने वाले, झुकने वाले और नर्म शख्स थे। आप खानदाने नुबुव्वत व नसब वाले घराने से थे और खतरों को जानते थे। और गिरया बहुत करते थे। जन्न व बहस और लैत व लअल से परहेज करते थे।

6— जाबिर बिन यज़ीद जाफ़ी जब आप (अ0) से रिवायत नक़ल करना चाहते तो इस तरह बयान करते: इस हदीस को वसी-ए-औसिया, वारिसे उलूमे अम्बिया मुहम्मद बिन अली बिन हुसैन (अ0) ने हमारे लिए बयान फरमाया है।

मज़क़ूर अक़वाल बुजुर्ग इस्लामी दानिश्वरों के इज़हारे नज़र के कुछ हिस्से हैं जो आपके मक़ाम की बुलन्दी व अज़मत की तसरीह व ताकीद करते हैं। अगरचे इमाम मुहम्मद बाकिर (अ0) की इल्मी, अमली, रूहानी शख्सियत और बजाते खुद आपका लोगों के साथ सुलूक व बर्ताव और इल्म व तक़वे के मैदान में आपका फ़ज़ल व करम अवाम के मुख़तलिफ़ तबकों के एतेराफ़ करने का सबब बना। उसके बावजूद आसमानी दीने इस्लाम जो इस बात का एतेकाद रखता है कि सिवाए इमाम की ज़ात के कोई ऐसे किरदार का हामिल नहीं हो सकता। सिर्फ़ इतने ही पर बस नहीं करता बल्कि मोतबर हवालों के ज़रिए इमाम की पहचान भी करता है।

आम तौर से जब किसी अहम मज़हबी मन्सब के लिए किसी शख्स को चुना जाता है तो इस्लामी शरीअत में सीधे उसकी पहचान करायी जाती है।

इसी के साथ इस बात पर भी ध्यान रखना चाहिए कि जो नस इमाम को मुअय्यन करती है उसे लाज़मी तौर पर दीन के हकीक़ी

नुमाइन्दे की तरफ से होना चाहिए न कि किसी और की तरफ से। जैसे खुदा के रसूल (स0) या फिर उस इमाम की तरफ जिसकी फ़िक्र व अमल की पैरवी वाजिब क़रार दी गई हो।

इसलिए अगरचे इमाम बाकिर (अ0) का अन्दाज़ व फ़िक्र और सुलूक एक शाइस्ता इमाम की खुसूसियत का हामिल था लेकिन पिछले इमामों की तरह आप भी क़ानूनी तौर पर नुसूसे शरीआ से इमाम के लिए मन्सूब हुए। कुछ रिवायतें इस हकीक़त की हिकायत करती हैं जिन्हें आप ज़ेल में मुलाहेज़ा करेंगे।

1— जाबिर बिन अब्दुल्लाह अन्सारी ने रसूले खुदा से पूछा: वह इमाम जो अली बिन अबी तालिब (अ0) की नस्ल से होंगे वह कौन हैं? तो रसूले अकरम (स0) ने फरमाया: “हसन व हुसैन (अ0) जन्नत के जवानों के सरदार हैं फिर उनके बाद अपने ज़माने के साबिरों के सरदार अली बिन हुसैन (अ0), उनके बाद बाकिर यानी मुहम्मद बिन अली (अ0)। ऐ जाबिर तुम उनको देखों और उनकी ख़िदमत में पहुँचो तो हमारा सलाम कहो।”

2— जाबिर इब्ने यज़ीद जअफ़ी कहते हैं हमने जाबिर बिन अब्दुल्लाह अन्सारी से इस तरह सुना: जिस वक़्त खुदावन्दे आलम ने इस आयत को अपने पैग़म्बर (स0) पर नाज़िल किया: “ऐ मामिनो खुदा और उसके रसूल व साहेबाने अम्र की इताअत करो।” तो रसूले अकरम (स0) से सवाल किया गया: खुदा और उसके रसूल को पहचान लिया लेकिन साहेबाने अम्र कि जिनकी इताअत खुदा व रसूल की इताअत है, कौन लोग हैं? तो आप (स0) ने फरमाया: “ऐ जाबिर वह हमारे जानशीन और मुसलमानों के इमाम हैं। उनमें से पहले अली

बिन अबी तालिब (अ0) फिर हसन (अ0) फिर हुसैन (अ0) फिर अली बिन हुसैन (अ0) फिर मुहम्मद बिन अली (अ0) .....हैं।”

3— इमामे सादिक (अ0) अपने बुजुर्ग बाप से नक़ल करते हैं: मैं जाबिर बिन अब्दुल्लाह अन्सारी के पास गया। जिस वक़्त उनके घर में पहुँचा तो उन पर सलाम किया, उन्होंने जवाब दिया। फिर उन्होंने पूछा आप कौन हैं? (जाबिर उस वक़्त नाबीना थे) हमने कहा मुहम्मद बिन अली बिन हुसैन (अ0)। उन्होंने कहा: फरज़न्दे रसूल (स0)! नज़दीक आइये। मैं नज़दीक हुआ, मेरे हाथ का बोसा दिया, इसके बाद कहा: रसूले खुदा (स0) ने आपको सलाम कहा था। हमने कहा: खुदा की रहमत व बरकत आँहज़रत (स0) पर हो, माजरा क्या है?

उन्होंने कहा: एक दिन रसूले खुदा (स0) के पास था। आप (स0) ने मुझ से फरमाया: “ऐ जाबिर तुम इस क़द्र ज़िन्दा रहोगे कि मेरे एक फरज़न्द मुहम्मद बिन अली बिन हुसैन (अ0) से मुलाकात करोगे। खुदावन्दे आलम ने उसको नूर व हिकमत अता फरमाया है उसको मेरा सलाम कहना।”

4— उसमान बिन ख़ालिद अपने बाप से नक़ल करते हैं: अली बिन हुसैन बिन अली बिन अबी तालिब (अ0) कमज़ोरी की वजह से लेटे हुए थे और अपने फरज़न्द मुहम्मद, हसन, अब्दुल्लाह, उमर, ज़ैद और हुसैन को इकट्ठा किया और उनसे वसियत फरमाई कि मेरे जानशीन मुहम्मद (अ0) हैं। आपकी कुनियत बाकिर क़रार दी और सबकी इमामत व रहबरी आपके हवाले की।

5— मालिक बिन अज़यन जहनी कहते हैं: अली बिन हुसैन (अ0) ने अपने फरज़न्द मुहम्मद बिन अली से वसियत फरमाई: “ऐ मेरे बेटे तुम्हें अपना जानशीन बनाया, तेरे सिवा जो भी दावा

करे कि मेरा जानशीन है खुदावन्दे आलम क़यामत के दिन आग का एक तौक़ उसकी गर्दन में डाल देगा। खुदा का शुक्र करो और उसका शुक्र नेमत बजा लाओ इसलिए कि जब तक शुक्र करोगे नेमत बाकी रहेगी, और जब नेमत का इन्कार करोगे तो ख़त्म हो जाएगी जो भी नेमत का शुक्र करता है उस शख्स से बेहतर है जो सिर्फ़ नेमत से फाएदा उठाता है। अगर नेमत का शुक्र करोगे तो यकीनन तुम्हारी नेमत को बढ़ा देंगे लेकिन अगर नेमत का इन्कार किया तो हमारा अज़ाब बहुत ही सख़्त है।”

6— अमीरुलमोमिनीन अली (अ0) ने अपनी शहादत के वक़्त इमामे हसन (अ0) से फरमाया: “ऐ मेरे बेटे! रसूले खुदा ने हमको हुक्म दिया है कि तुमको अपना जानशीन बनाऊँ, अपने सहीफे व हथियार को तुम्हारे हवाले करूँ और जिस तरह आँहज़रत (स0) ने मुझे अपना वसी बनाया और अपनी किताब व हथियार हमारे हवाले किया और मुझ से तुम्हारे मुताल्लिक वसियत की थी, तुम अपनी वफात के वक़्त यह चीज़ें अपने भाई हुसैन (अ0) के हवाले कर देना। यह आँहज़रत का हुक्म है।”

फिर आँहज़रत (अ0) ने अपनी सूरत हुसैन (अ0) की तरफ की और फरमाया कि: “रसूले खुदा (स0) ने हुक्म किया है कि तुम इसे मुहम्मद बिन अली (अ0) के फरज़न्द के हवाले करना और रसूल खुदा (स0) का और मेरा सलाम कहना।”

यह रिवायात कुछ शरअी नुसूस में जो मुहम्मद बिन अली (अ0) और आपके बुजुर्ग बाप की इमामत पर दलालत करती हैं और आप (अ0) को अपने ज़माने का फिक्री व इज्तेमाओ मरजा क़रार देती हैं। (उसूले काफ़ी जि-1 पे-305)



# हज़रत इमाम अली नकी अलैहिस्सलाम

आयतुल्लाह सैय्यद मुहम्मद हुसैन तबातबाई

हज़रत इमाम अली इब्ने मुहम्मद तकी अलैहिस्सलाम (जिन्हें कभी-कभी उनके लक़ब हादी के नाम से भी याद किया जाता था) नवें इमाम के साहबज़ादे थे। आप 212 हि० मुताबिक 827 ई० में मदीने में पैदा हुए, और शीअी रिवायात के मुताबिक अब्बासी ख़लीफा मुअत्तिज़ के ज़रिए ज़हर दिये जाने से 254 हि० मुताबिक 868 ई० में आपकी शहादत वाके हुई।

आप सात अब्बासी ख़लीफा मामून, मुअत्तसिम, वासिक, मुतवक्किल, मुन्तसिर, मुस्तईन और मुअत्तिज़ के ज़माने के थे। वह मुअत्तसिम का दौरे ख़िलाफ़त था जब 220 हि० मुताबिक 835 ई० में ज़हर दिये जाने से बग़दाद में आपके बुजुर्ग बाप का इन्तेक़ाल हुआ। उस वक़्त हज़रत इमाम अली इब्ने मुहम्मद तकी मदीने में थे। वहाँ आप हुक्मे खुदावन्दी और अपने पेशरवों के फ़ैसले के मुताबिक इमाम मुकर्रर हुए। आप मुतवक्किल के दौरे ख़िलाफ़त तक मदीने में मुक़ीम रहे और मज़हबी उलूम के दर्स व तदरीस में मशगूल रहे।

243 हि० मुताबिक 857 ई० में इमाम पर लगाए गए एक झूठे इल्ज़ाम के नतीजे में मुतवक्किल ने अपने एक सरकारी अफसर को हुक्म दिया कि वह इमाम को मदीने से सामरा बुलाए जो कि उस वक़्त उसकी राजधानी था। उसने खुद इमाम (अ०) को खुश अख़लाकी और लुत्फ व इनायात के इज़हार से भरा एक खत लिखा कि आप राजधानी आ जाएँ ताकि यहाँ

आपस में मीटिंग की जा सके। सामरा पहुँचने पर वहाँ ज़ाहिरी इनायात और ताज़ीम के साथ आपका इस्तेक़बाल किया गया। साथ ही साथ मुतवक्किल ने हर मुमकिन तरीक़े से इमाम को तकलीफ देने और उनकी बेइज़्ज़ती करने की कोशिश भी की। कई बार उसने इमाम (अ०) को क़त्ल करने या उनकी तौहीन की गर्ज से उन्हें अपने सामने पेश करवाया और उनके घर की तलाशी ली।

अहलेबैते अतहार (अ०) के बारे में अपनी दुश्मनी में मुतवक्किल दूसरे अब्बासी ख़लीफा से कुछ कम न था। वह हज़रत अली (अ०) का ख़ास तौर से मुख़ालिफ़ था। और अलल एलान उनका इन्कार किया करता था। उसने एक मसख़रे को हुक्म दिया था कि वह बड़ी-बड़ी महफ़िलों में हज़रत अली (अ०) का मज़ाक़ उड़ाया करे।

237 हि० मुताबिक 850 ई० में उसने हुक्म दिया था कि कर्बला में वाके हज़रत इमाम हुसैन (अ०) के रौज़-ए-अक़दस और उसके चारो तरह बने हुए मकानों को ढा दिया जाए। इसके बाद इमामे हुसैन (अ०) के रौज़े पर नदी का रुख़ मोड़ दिया गया। उसने इमाम (अ०) के रौज़े की ज़मीन पर हल चला कर उस पर खेती करने का हुक्म दिया ताकि आपकी क़ब्र का कोई निशान बाकी न रहे। मुतवक्किल की ज़िन्दगी में हिजाज़ के अन्दर औलादे अली की हालते ज़ार इतनी दर्दनाक हो गई थी और इस मन्ज़िल को पहुँच गई थी कि

**बक़िया पेज 14 पर**



## हज़रत अबुतालिब अ० की वफात

मौलाना सै० असद अली साहब किब्ला

“शेअब” के मुजाहेदे अबुतालिब (अ०) की ज़िन्दगी के आख़री कारनामे थे। इस नज़रबन्दी से छुट कर आए हुए अभी आठ महीन कुछ दिन हुए थे कि अबुतालिब (अ०) बीमार हुए। छियासी साल का सिन हो चुका था रिहलत की सदा कानों से करीब तर होती महसूस हुई, गुबारे कारवाँ नज़र आया। यहाँ भी सामाने सफर बाँधने की देर है बस एक काम बाकी है और अहम तरीन काम यानी अपने बाद का इन्तिज़ाम। कुरेश के बड़ों को इकट्ठा किया, वसियत की जिसकी अदबी हैसियत भी बुलन्द है, जिसको “बुलूगुल अरब”, “तारीखुलख़मीस दजलानी” “हलबी” ने अपनी तारीख़ों में लिखा है वसियत का खुलासा यह है:

ऐ गिरोहे कुरैश तुम चुने हुए रोज़गारे अरब की जान हो, माने हुए सरदार, बेबदल बहादर तुम्हीं में पैदा हुए, अरब के किरदार व शरफ के ख़ज़ाने तुम ही हो, यही तुम्हारी कामियाबी का राज़ है। और इसी लिए तुमको वसीला बनाया जाता है। मुक़ाबले के मौक़े पर आलम की हिमायत तुमको हासिल है। देखो काबे की अज़मत दिल से मिटने न पाए, क्योंकि इसमें इलाही खुशी, रिज़क की बढ़ोत्तरी, कदमों का जमना है। सिला रहम करते रहना इसमें लम्बी ज़िन्दगी और औलाद की ज़्यादती का राज़ छुपा है। बगावत व नाफरमानी छोड़ो क्योंकि इन्हीं के वजूद से पिछली उम्मतें हलाक हुई। दावते हक़ पर लब्बैक कहो और

सवाल करने वाले की ज़रूरत पूरी करो इन्हीं बातों में मौत व ज़िन्दगी की शराफत है। सच बोलते रहना, अमानत अदा करते रहना, ताकि ख़ास लोगों से मुहब्बत और आम लोगों में इज़्ज़त बरक़रार रहे, मैं मुहम्मद (स०) के बारे में तुमको वसियत करता हूँ वह कुरैश के अमीन और अरब के सादिक हैं। और मैंने जिन बातों की तुमको वसियत की है वह सब उनमें मौजूद हैं।

वह एक ऐसा पयाम लेकर आए हैं जिसको दिल मान चुका है। ज़बान इन्कार कर रही है दुश्मनी के ख़याल से। जैसे मैं देख रहा हूँ कि अरब की जमाअतें उनके पयाम को क़बूल कर चुकी हैं। और वह उनको लेकर मौत के भंवर में कूद पड़े हैं। (इसी को यकीने मुहक़म कहते हैं कि हाल के आइने में मुस्तक़बिल की कामियाबियाँ नज़र आएँ) जिसके बाद कुरैश के सरदार हकीर हो गए और कमज़ोर लोग मालिक बन गए और जो उनमें अज़ीम शख़सियतों के मालिक थे वही सबसे ज़्यादा मुहताज हो गए। अरब के लोगों ने उनसे सच्ची मुहब्बत की और उनकी इताअत कुबूल की, सरदारी की लगाम उनके हाथों में दे दी।

ऐ गिरोहे कुरैश उनके रफ़ीक़े कार बन जाओ और उनके गिरोह के हामी हो जाओ, खुदा की क़सम जो उनके पयाम को कुबूल करेगा हिदायत पा जाएगा और खुशकिस्मत निकलेगा।

बक़िया पेज 14 पर

“खुदा तुम लोगों की ज़िन्दगी आसान करना चाहता है।”

(सूर-ए-निसा)

## इस्लाम में शादी के ऊँचे मक़सद

(पिछले शुमारे से आगे)

हुज्जतुल इस्लाम प्रो० हुसैन अन्सारियान  
अनुवादक : मु० र० आबिद

### काबलियत/क्षमता का निखार

जब लड़का-लड़की फ़ितरत (प्रकृति) और तबियत (मनोवृत्ति) की बुनियाद पर, खुदा के कहने पर चलते हुए और नबियों के तरीक़े को अपनाते हुए शादी करते हैं तो खुदाई अज़ाब से, अन्दरूनी उथल-पुथल से, शैतानी जाल से और खुदा की लानत धिक्कार से छुटकारा पा जाते हैं। शादी के नतीजे में उन्हें मन का चैन और इत्मिनान मिल जाता है, कुँवारेपन से पैदा होने वाली कठिनाइयों पर कन्ट्रोल पा लेते हैं और अकेलेपन की ज़िन्दगी से छुटकारा मिल जाता है। इस तरह वे खुदाई (दैव्य) पाक माहौल में पहुँच जाते हैं, सही सोचते हैं। सेक्स का भूत उन पर से उतर जाता है। बेशक शादी से अन्दर छिपे गुण, सलाहियत और काबलियत समाने आ जाती है और ज़िन्दगी के पौधे में बेहतरीन फल आ जाते हैं।

बहुत से ज्ञानी विज्ञानी और इस्लामी आलिमों के बारे में इतिहास में मिलता है कि उन्होंने शादी के बाद सौ साल के रास्ते को एक बार में तय किया। शादी से जो उन्हें चैन व इत्मिनान मिला उससे वे ज्ञान की ऊँचाईयों पर पहुँचे। वह ज्ञान तक्वा, पाकी, बड़ाई, इबादत और जनसेवा में मशहूर हुए।

आयतुल्लाह बुरुजर्दी की जीवनी में (पेज-95) में है:- 1314 हि० (1934-35 ई०) में उनकी उम्र 22 साल की हुई तो उनके पिता ने उन्हें ख़त लिखकर बुरुजर्द बुलाया। उन्होंने सोचा कि वे उन्हें शियों के सबसे बड़े धर्म निकेतन हौज़-ए-इल्मिया, नजफ़ अशरफ़ भेजना चाहते हैं, पर बुरुजर्द पहुँचने पर मालूम पड़ा कि उनकी इस सोच के ख़िलाफ़ उनकी शादी की तैयारियाँ हो रही हैं। इससे उन्हें बहुत दुख होता है। पिता ने उन्हें दुखी देख उसकी वजह जानना चाही तो कहा कि मैं इत्मिनान और लगन से पढ़ रहा था लेकिन अब लगता है कि शादी मेरे और मेरे मक़सद के बीच आड़े आ जाएगी और मक़सद तक पहुँचने न देगी।

उनके वालिद ने कहा: बेटा! यह जान लो कि अगर तुम बाप की मर्जी पर चलोगे तो खुदा की तौफ़ीक़ (अनुकूलन) से बहुत तरक्की करोगे और यह भी सोचो कि अगर बाप की ये चाहत पूरी न करोगे तो तुम पढ़ाई-लिखाई की अपनी इन कोशिशों के होते हुए भी किसी जगह पहुँच न सकोगे। बाप की बातों ने असर किया और वे हर तरह की शक और दुलमुलपन से छुटकारा पा गये। शादी के बाद कुछ दिन बुरुजर्द में टिक कर दोबारा इस्फ़ेहान आ गये और पाँच

साल तक पढ़ाई का सिलसिला चालू रखा। दूसरी कलाएँ सीखने में भी मेहनत की। उनकी वफादार बराबर वाली बीवी ने उन्हें इस्फेहान में आराम और चैन दिये और एक मेहरबान दोस्त, चाहने वाली साथी, बेहतरीन सेवा भाव वाली (पतिवृत्ता) की तरह अपने पति की तरक्कियों की ज़मीन बराबर की। इस तरह इस्फेहान में जो पाँच साल बिताये उनमें वे बड़े मन से और सुख-चैन से पढ़ाई-लिखाई में जुटे रहे कि कभी-कभी रात-रात भर पढ़ाई में लगे रहते थे। जब कोई और काम न होता ता कुर्आन याद (हिफ़ज़) करते। यूँ इस्फेहान

रहते पूरा सूरा 'बराअत' याद कर लिया जो ज़िन्दगी भर न भूले और बराबर उसकी तिलावत (पाठ) करते रहे।

तफ़सीर 'अल-मीज़ान' नाम से तफ़सीर (कुर्आन-व्याख्या) लिखने वाले तबातबाई मरहूम अपनी कुछ ज्ञान से जुड़ी (इल्मी) और आध्यात्मिक (रुहानी) तरक्कियों और कमालों को अपनी बीवी की देन बताते हैं।

बेशक शादी से सुख-चैन मिलता है और इससे काबिलियत, सलाहियत, वैभव के अखुँवे फूटते हैं।

(जारी)

### बक़िया .....हज़रत इमाम अली नकी अलैहिस्सलाम

अपना सर ढाँकने के लिए बीबियों के पास चादरें तक नहीं रही गयीं थीं उनमें की बहुतसे ख़वातीन के पास सिर्फ एक चादर थी जिसे वह नमाज़ के वक़्त ओढ़ लिया करती थीं। इसी तरह का दबाव औलादे अली (अ0) के उन लोगों पर भी डाला जा रहा था जो मिस्र में मुक़ीम थे। दसवें इमाम को बड़े सब्र व बर्दाश्त के साथ उस वक़्त तक अब्बासी ख़लीफा की अज़ियत और क़हर बर्दाश्त करना पड़ा जब तक कि ख़लीफा का इन्तेक़ाल नहीं हो गया और जिसके बाद मुन्तसिर, मुस्तईन और आख़िर में मुअ़त्तिज़ ख़लीफा नहीं हो गए और जिनके इशारे से इमाम (अ0) को ज़हर देकर शहीद नहीं कर दिया गया।



### बक़िया .....हज़रत अबुतालिब अ0 की वफ़ात

अगर मौत का फरिश्ता मुझको मोहलत देता तो मैं और कुछ हादसों का मुकाबला करता। और उनकी हिमायत करता। याद रखो कि जब तक तुम मुहम्मद (स0) की पैरवी करते रहोगे ख़ैरियत से रहोगे इसलिए इताअत करते रहो ताकि हिदायत पाओ।

बेअसत के दसवें साल जनाबे अबुतालिब (अ0) का मक्का में इन्तेक़ाल हुआ। अमीरुलमोमिनीन (अ0) तशरीफ लाए बारगाहे नबुव्वत में ख़बर की, इरशाद हुआ जाओ उनके गुस्ल व कफन का इन्तिज़ाम करो खुदा उनकी मग़फ़िरत करे और रहमत के ठिकाने में जगह दे।

इब्ने अब्बास नक़ल करते हैं कि जनाबे अबुतालिब का जनाज़ा देखकर सरवरे काएनात (स0) ने फरमाया चचा आपने ख़ूब हक़ अदा किया, खुदावन्दे आलम इसका अज़रे कामिल अता करे।

हज़रत (अ0) के ग़म व अफ़सोस का अन्दाज़ा इस से हो सकता है कि आप (स0) ने इस साल का नाम "आमुलहुज़्न" रखा। यानी ग़म व अफ़सोस का साल।



इदारा

मुख्य समाचार

## बेगुनाहों का खून बहाने वाले इन्सानियत के बदतरीन दुश्मन: मौलाना कल्बे जवाद

**लखनऊ।** काएदे मिल्लत मौलाना सैय्यद कल्बे जवाद नकवी साहब ने मुम्बई और कश्मीर में हुए सिलसिलेवार बम धमाकों की सख्त अल्फाज़ में मज़म्मत की है। उन्होंने अपने एक बयान में केन्द्र सरकार से मुतालबा किया कि इस तरह की वारदातों के लिए ग़ैर सियासी अफ़राद के ज़रिए एक उच्चस्तरीय कमेटी बनाकर जाँच करायी जाए। काएदे मिल्लत ने कहा कि बेगुनाह अफ़राद के खून बहाने वालों का न कोई मज़हब है न धर्म, बल्कि वह इन्सानियत के बदतरीन दुश्मन हैं। हम ऐसी गन्दी हरकत करने वालों की सख्त मज़म्मत करते हैं।

उन्होंने कहा कि आम तौर पर ऐसे वाक़ेआत की जाँच में काफी देर होती है और जाँच एजेंसियाँ ग़ैरजानिबदारी की राह से भटक जाती हैं ऐसे में बेगुनाह अफ़राद के क़त्ले आम के ज़िम्मेदार भी बेगुनाह ही ठहरा दिये जाते हैं। और इन्साफ़ के नाम पर मज़लूम को ही सज़ा भुगतनी पड़ती है। और असल मुजरिम बच निकलने में कामियाब हो जाते हैं। काएदे मिल्लत ने कहा कि ऐसे में ज़रूरी है कि सरकार जल्द से जल्द उच्चस्तरीय कमेटी के ज़रिए इन वाक़ेआत की जाँच कराकर मुलज़िमान को उनके अन्जाम तक पहुँचाने की कोशिश करे।

## मौलाना कल्बे जवाद साहब की कोशिश से 13-रजब को आम छुट्टी का एलान

**लखनऊ।** हज़रत अली (अ0) के यौमे पैदाईश 13-रजब को रियासती हुकूमत के ज़रिए आम छुट्टी का एलान किया गया है। इस सिलसिले में प्रिंसपल सिक्रेटरी (जनरल एडमिनिस्ट्रेटर) एस0आर0 लाखा ने बताया कि हज़रत अली (अ0) के यौमे पैदाईश पर एलान की गई इख़्तियारी छुट्टी को आम छुट्टी होने का एलान किया गया है। उन्होंने बताया कि यह छुट्टी मक़ामी चाँद होने के बाद दी जायेगी और डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट इस छुट्टी की तारीख़ अगर ज़रूरत पड़ी तो दोबारा तैय कर सकते हैं।

याद रहे कि पिछली 9 जुलाई 2006 ई0 को मौलाना कल्बे जवाद साहब ने मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव को एक मेमोरेण्डम दिया था जिसमें कई मामलों के साथ-साथ हज़रत अली (अ0) की पैदाईश के मौके पर 13-रजब को आम छुट्टी का मुतालबा भी शामिल था। 13-रजब की छुट्टी का मुतालबा रियासती हुकूमत ने दस दिन के अन्दर पूरा करते हुए आज इसका एलान भी कर

दिया है। हालाँकि अभी कई दूसरे मुतालबे पूरे नहीं किये गए हैं। यहाँ यह बात और है कि 13-रजब की छुट्टी के मामले में 19 जुलाई को शीआ पर्सनल लॉ बोर्ड के ज़रिए एक हंगामी मीटिंग बुलाई गयी थी और इन्तेज़ामिया कमेटी ने यह तैय किया था कि वह 13-रजब की छुट्टी के लिए मुख्यमंत्री से मुलाक़ात करेंगे। हालाँकि जब यह हंगामी मीटिंग बुलाई गई थी उस वक़्त हुकूमत में मौलाना कल्बे जवाद साहब की कोशिश की बिना पर 13-रजब की छुट्टी की फाइल पूरी होने को थी और इस पर हुक्म जारी करने की तैयारी हो रही थी।

आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के उपाध्यक्ष मौलाना डॉक्टर कल्बे सादिक साहब ने पैगम्बरे इस्लाम (स0) के जानशीन हज़रत अली (अ0) के यौमे विलादत यानी 13-रजब को आम छुट्टी किये जाने के मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव के एलान का इस्तेक़बाल करते हुए उनका शुक्रिया अदा किया है।



## शावेज़ और अहमदी नेजाद ने अमरीका को आड़े हाथों लिया

### गुलामों के तौर पर अफ्रीकी शहरियों की खरीद व फरोख्त को याद दिलाया

**बानजोल।** वेनुजुएला और ईरान ने 53 रुकनी अफ्रीकी यूनियन की सरबराह कान्फ्रेंस में गुलामों के तौर पर अफ्रीकी शहरियों की खरीद व फरोख्त और उसके खिलाफ कोशिश को याद दिलाते हुए तीसरी दुनिया की आजादी की जंग का जिक्र किया। वेनुजुएला के राष्ट्रपति हयुगोशावेज़ ने कहा कि उनके मुल्क ने "अमरीकी साम्राजियत" की जंजीरें तोड़ दी हैं।

उन्होंने कान्फ्रेंस से खिताब करते हुए कहा कि उनके मुल्क ने "अमरीकी साम्राजियत के इस्तेहसाल से आजिज़ आकर कह दिया कि 'अब और नहीं'। हमने अपनी जंजीरें तोड़ दी हैं। हमने ग़ैर मुल्की दखलअन्दाज़ी से आज़ाद वेनुजुएला की तामीर की है।"

वेनुजुएला के राष्ट्रपति ने ईरान के न्युकिलियाई प्रोग्राम की हिमायत करते हुए कहा कि "क्या ईरान के पास

पुरअमन मकासिद न्युकिलियाई टेक्नालोजी फरोग करने का हक़ नहीं है।"

शावेज़ ने कहा कि बेशक (पुरअमन मकसद के लिए न्युकिलियाई टेक्नालोजी फरोग करने का) उसको हक़ हासिल है।

सरबराही कान्फ्रेंस से खिताब करते हुए ईरान के राष्ट्रपति डाक्टर अहमदी नेजाद ने कहा कि "ज़ोर व जबरदस्ती करने वाली ताकतें" ग़रीब मुल्कों की रकम और जाएदाद लूट रही हैं। अहमदी नेजाद ने कहा कि वह समझती हैं कि दुनिया के मुल्कों और कौमों को उनका गुलाम होना चाहिए उन्होंने गुलामों की सौदागरी की जानिब इशारा करते हुए कहा कि "हम जानते हैं कि अफ्रीका और लातीनी अमरीका के इस्तेहसाल ज़दह और मज़लूम लोगों को कितना झेलना पड़ा है।"

## लेबनान पर इसराईली जारिहाना हमलों के खिलाफ़

### मौलाना कल्बे जवाद की कयादत में आसफी मस्जिद में जबरदस्त मुजाहेरा

**लखनऊ।** मुसलमानों को पूरी तरह तबाह व बर्बाद करने की साज़िश के तहत दुनिया के दहशतगर्दों का सरगना अमरीका ही मुस्लिम मुमालिक पर हमले करा रहा है। इसी साज़िश के तहत अपनी हिमायत इसराईल को देकर लेबनान पर नाजाएज़ हमले को जाएज़ करार दे रहा है। जिससे अब तक काफी तादाद में मुसलमान मर्द, बच्चे और और औरतें शहीद हो चुके हैं। चाहे वह पाकिस्तान में शीओं पर हमले हों या इराक़ में जारी जंग, सब में अमरीका ही का हाथ है। पाकिस्तान में अल्लामा हसन तुराबी की शहादत भी उसी के इशारे पर हुई। इराक़ में दहशतगर्दों का काम अमरीका ही अन्जाम दे रहा है और नाम शीआ सुन्नी का बदनाम कर रहा है। यह बात तन्ज़ीमे पासदाराने हुसैनी और नूरे हिदायत फाउण्डेशन की जानिब से अमरीका और इसराईल की साज़िश के

तहत मुसलमानों को तबाह व बर्बाद करने के मन्सूबे की नियत से लेबनान पर जारी हमले के खिलाफ़ आसफी मस्जिद में अज़ीम मुज़ाहरे की कयादत करते हुए काएदे मिल्लत मौलाना कल्बे जवाद ने कही है।

मौलाना कल्बे जवाद साहब ने कहा कि स्कूल और अस्पताल तबाह कर दिये गए। यह एहतेजाज़ सिर्फ़ अमरीका और इसराईल के खिलाफ़ ही नहीं बल्कि उन मुस्लिम मुल्कों के खिलाफ़ भी है जो अमरीका की गुलामी कुबूल करके ख़ामोश बैठे हैं। उन्होंने कहा कि हुकूमते हिन्द को भी चाहिए कि वह इसके खिलाफ़ आवाज़ उठाए।

मौलाना ने कहा चूँकि लेबनान पर यह जुल्म अमरीका की पुश्तपनाही में हो रहा है इसलिए अमरीका हिमायती अफराद और इदारे इसराईल के खिलाफ़ एहतेजाज़ व मुज़ाहरे से भी कतरा रहे हैं।